घोल मछली

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस]

गुजरात ने हाल ही में **ब्लैक-स्पॉटेड क्रोकर (प्रोटोनिबिया डायकैंथस)**, जिसे स्थानीय तौर पर **घोल मछली** के नाम से जाना जाता है, को **राज्य मछली** घोषित किया है।

- यह निर्णय विभिन्न कारकों पर आधारित था, जिसमें इसकी विशिष्टता, आर्थिक मूल्य तथा संरक्षण की आवश्यकता पर ज़ोर देना था।

घोल मछली से संबंधित मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **भौगोलिक वितरण:**
  - घोल मछली मुख्य रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में पाई जाती है।
    - इसका प्राकृतिक वास **फारस की खाड़ी** से लेकर **प्रशांत महासागर** तक विस्तृत है।
- **आर्थिक महत्त्व:**
  - घोल मछली की **चीन और अन्य एशियाई देशों** के बाज़ार में पर्याप्त मांग है।
    - घोल मछली को इसके उच्च बाज़ार मूल्य के कारण **'सी गोल्ड'** के नाम से भी जाना जाता है।
  - इसका मांस **यूरोपीय और मध्य-पूर्वी देशों** में निर्यात किया जाता है, जबकि **ड्राई एयर ब्लैडर** की विशेष रूप से चीन में अत्यधिक मांग है।
  - गुजरात में एक किलोग्राम घोल की कीमत 5,000 रुपए से 15,000 रुपए तक है।
    - ड्राई एयर ब्लैडर, जिसे सबसे महँगा हिस्सा माना जाता है, निर्यात बाज़ार में इसकी कीमत 25,000 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुँच सकती है।
- **लाभ:**
  - आँखों के स्वास्थ्य के लिये अच्छा है और आँखों की रोशनी बनाए रखने में सहायता करती है।
  - उम्र बढ़ने और झुर्रियों को रोकने के लिये घोल मछली में मौजूद कोलेजन की मात्रा झुर्रियों को रोकती है और **त्वचा की लोच को भी बरकरार** रखती है।
  - अगर इसे नियमित रूप से खिलाया जाए तो घोल मछली में मौजूद ओमेगा-3 की मात्रा शिशुओं की इंटेलिजेंस कोशेंट (IQ) में सुधार करती है, यह **मस्तिष्क कोशिकाओं के विकास** में सहायता करती है।
- **संरक्षण:**
  - अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) की रेड लिस्ट: निकट संकटग्रस्त।

नोट:

- समुद्री और अंतर्देशीय मछली प्रजातियों की समृद्ध विविधिता के साथ गुजरात, भारत में मत्स्य उत्पादन में अग्रणी राज्यों में से एक है।
- वर्ष 2021-22 में गुजरात में कुल **8.74 लाख टन मछली उत्पादन दर्ज किया गया।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ghol-fish